148. **[The Questioners (Shri Barjinder Singh Hamdard and Shri Balwant Singh Ramoowalia) were absent. For answer *vide* col..... infra.]**

149. **[The Questioner (Shri K.M. Khan) was absent. For answer *vide* col..... infra.]**

Sale of Scattered Aluminium Foil and Plastic Material Collected by the Ragpickers from the Railway Stations in Delhi

*150. SHRI S. RAMACHANDRAN PILLAI:
SHRI E. BALANANDAN:

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether attention of Government has been drawn to the news item which appeared in the Statesman dated 19th December, 1997, about the collection of scattered aluminium foil, plastic glasses, plates, spoons and soft drinking straws by the ragpickers at Delhi railway stations who sell them back to the shopkeepers; and

(b) if so, the reaction of the Government thereto?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI RAM NAIK): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the Rajya Sabha.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) Checks have been intensified by the Railways, particularly on Northern Railway to curb the activity of recycling of disposable containers in Delhi area. Efforts are being made to avoid use of plastic cups/glasses as far as possible and to replace them gradually by biodegradable paper cups/glasses. Public awareness is being created by use of stickers and by making announcements on the Public Address System to crush such items after use.

SHRI S. RAMACHANDRAN PILLAI: Sir, this is a very serious matter. We have been complaining about this issue again and again. Here, the Minister's reply does not speak about the specific action taken on the matter. I would like to know what specific steps the Government intends to take to stop this practice.

SHRI RAM NAIK: Sir, the question was regarding sale of scattered aluminium foil and plastic material collected by ragpickers from the railway station in Delhi. We have examined the issue and we are trying to ensure firstly that plastic containers are not thrown away. We are also putting stickers on these containers that they should be crushed after use. For this, we seek the co-operation of the people who are using plastic containers. Once they are crushed, they cannot be sold. We are conducting surprise checks as well. In the month of April, over a period of 15 days, we conducted seven checks at the New Delhi railway station, and eight to ten boys, who were trying to collect them, were caught. These ragpickers first collect these plastic containers; then these are purchased by the recyclers of plastic materials. They manufacture granules and sub-standard bags out of them. So, recycling goes on everywhere. But, so far as water bottles are concerned, it has to be ensured that they are not allowed to be picked up by the ragpickers. So, we are ensuring that ragpickers are not allowed to come into the railway station premises.

SHRI S. RAMACHANDARAN PILLAI: Sir, the Minister admits that this is a thing which has been going on for several years. It has also come to the notice of the Ministry that violations are there. I would like to know from the Minister whether the Ministry has initiated any action against the wrong-doers. I also want to know from the Minister whether there are adequate provisions in the law to prosecute such offenders.

The Question was actually asked on the floor of the House by Shri S. Ramachandran Pillai.

SHRI RAM NAIK: Presently, the question which has been raised is, how to avoid it. What we are suggesting is that more and more items which are not degradable such as *pattals* and *kullars* can be used in a hygienic way. So, we are starting that process. Presently, we have decided that at least *dahi* and vegetables can be served in *kullars* and *pattals*. We are trying to experiment it and as we get the response, we will take a final decision on an all-India basis as well.

श्री मोहम्मद सलीम: सर, मंत्री महोदय अभी जो जवाब दे रहे थे, सवाल यही है। हमारे यहां जो डिस्पोज़ करने का तरीका है और जो ट्रेनिंग दी जानी चाहिए थी वह नहीं होने के कारण आपने कुछ चीजें इंट्रोड्यूज कर दी है, उससे इन्वायरमेंटल पॉल्यूशन हो रहा है, हैजार्डस हो रहे हैं। महोदय, साफ-सुथरा रखने के लिए यह सब किया गया था लेकिन हर स्टेशन, हर जगह आप देखें— अभी मलकानी जी प्लास्टिक बोटल्स की बात कर रहे थे — तो रेल सबसे ज्यादा पोल्यूटिड होती जा रही है। उनकी ट्रेनिंग न होने के कारण आप किसी भी लॉग डिसटेंस पर ऐक्सप्रैस ट्रेन में जाएं तो दो कॉचों के बीच में आप देखेंगे कि तमाम ऐल्यूमीनियम फॉयल्स, प्लास्टिक सफर करते-करते लोग रास्ते में फैंक देते हैं और रेल लाइन के किनारे प्लास्टि का अम्बार लगा रहता है। मेरा एक सवाल तो यह है कि आप कितने पेपर, मिट्टी और ट्राइबल एरिया से जो पत्तल आते हैं, उन तमाम चीजों को — यह हिन्दुस्तान है और हमारे यहां यह रॉमैटीरियल अवेलेबल है और गरीब से गरीब लोग इसे बनाते है — तो क्या आप उन्हें रिप्लेस करने की बजाय और इम्प्रूव करके उनके इस्तेमाल करने पर तवज्जों देंगे और उसे बढ़ाएंगे ताकि यह जो सामान डिसपोज़ करते वक्त मिट्टी के कुल्हड आदि कहीं भी फैंक देते हैं तो वहा पत्तल इस्तेमाल हो जाएंगे? तो एक तरफ तो यह निर्णय था। किन्तु आप कितनी जल्दी इसे लागू करेंगे? दूसरा है, जहां आप इसे लागू नहीं कर सकते हैं। सर, इनवॉयरमेंट ऑफ एन०जी०ओज—क्योंकि यह रेगपिकर्स का मामला है, स्ट्रीट चिलड्रन का मामला है — हर रेलवे स्टेशन पर आप जाएं तो अजीब किस्म का एक चक्कर है। यह लोग काफी ऐक्सप्लॉयटिड हो रहे हैं, उन्हें आपके इम्प्लॉइज़ भी भगाते हैं। तो वह भी किसी न किसी ऐक्सपॉयटेशन के शिकार हो रहे हैं, जो म्यूनीसिपल अथॉरिटी है, उसके साथ एन०जी०ओज़ को इनवॉल्व करके क्या आप ऐसा कुछ कदम उठाएंगे, क्योंकि रेलवे स्टेशंस में ऐसे ही गंदगी फैल रही है कि आप एक छोटी सी जगह दे देते हैं। इसलिए आप उसे एन०जी०ओज़ की मदद में ऑरग्राइज्ड वे से करें ताकि ऐक्सप्लॉयटेशन न हो, और अगर रीसाइक्लिंग कर सकते हैं तो सही ढंग से रीसाइक्लिंग करें ताकि जो पॉल्यूशन है, वह भी न हो और गंदगी भी न फैले। मैंने दो सजैशन दिये हैं। आप कृपया बताएं कि कौन सा सजैशन आप ऐक्सैप्ट करेंगे या दोनों ही सजैशन ऐक्सैप्ट करेंगे और कब तक इसे लागू करेंगे? एक रजिस्टैंस पैसेंजर्स का है। इसलिए साफ सुथरे कुल्हड़ भी बनाए जा सकते हैं। इस पर भी प्रयोग करना पड़ेगा। जैसे जैसे हम अच्छे कुल्हड़ बना सकेंगे, मुझे लगता है कि अपने आप पैसेंजर्स उसे ऐक्सैप्ट करेंगे।

†[ ]

†[ ]Transliteration in Arabic Script

جو میونسپل اتھارٹی ہے۔ اس کے ساتھ
این۔جی۔او۔ کو انوالو کر کے کیا آپ
ایسا کچھ قدم اٹھائیں گے، کیونکہ ریلوے
اسٹیشن میں ایسے ہی گندگی پھیل
رہی ہے کہ آپ ایک چھوٹی سی جگہ دے
دیتے ہیں۔ اسلئے آپ اسے این۔جی۔او
کی مدد سے آرگنائز کروا سے کریں
تاکہ ایکسپلائٹیشن نہ ہو اور اگر وہ
سائیکلنگ کر سکتے ہیں تو صحیح ڈھنگ
سے ری سائیکلنگ کریں تاکہ جو پالیوشن
ہے، وہ بھی نہ ہو اور گندگی بھی نہ پھیلے۔
میں نے دو سجیشن دیئے ہیں۔ آپ
کرپیا بتائیں کہ کون سا سجیشن آپ
ایکسیپٹ کریں گے یا دونوں ہی سجیشن
ایکسیپٹ کریں گے اور کب تک اسے
لاگو کریں گے۔

پلاسٹک سفر کرتے کرتے لوگ راستے میں
پھینک دیتے ہیں اور ریل لائن کے کنارے
پلاسٹک کا انبار لگا رہتا ہے۔ میرا ایک
سوال تو یہ تھا کہ آپ کتنے پیپر، مٹی اور
ٹرائبل ایریاز سے جو پتّل آتے ہیں، ان
تمام چیزوں کو۔ یہ ہندوستان ہے اور
ہمارے یہاں یہ راء میٹیریل اویلیبل ہے۔

اور غریب سے غریب لوگ اسے بناتے ہیں
تو کیا آپ انھیں ریلیس کرنے کے بجائے
اور امپروو کر کے ان کے استعمال کرنے پر
توجہ دیں گے اور اسے بڑھائیں گے تاکہ یہ
جو سامان ڈسپوزل کرتے وقت مٹی
کے کلھڑ آدی کہیں بھی پھینک دیتے ہیں
تو وہاں پتل استعمال ہو جائیں گے؟
تو ایک طرف تو یہ کہنے تھا۔ کتنو آپ
اسے کتنی جلدی لاگو کریں گے؟ دوسرا
ہے، جہاں اسے آپ لاگو کر سکتے ہیں۔
سر انوائرمینٹ آف این۔جی۔او
کیونکہ یہ ریگ پیکرس کا معاملہ ہے،
اسٹریٹ چلڈرن کا معاملہ ہے، ہر ریلوے
اسٹیشن پر آپ جائیں تو عجیب قسم
کا ایک چکر ہے۔ یہ لوگ کافی ایکسپلائیٹڈ
ہو رہے ہیں، انہیں آپ کے امپلائز
بھی بھگاتے ہیں۔ تو بھی کسی نہ کسی
ایکسپلائیٹیشن کے شکار ہو رہے ہیں۔

श्री राम नाईक: हम आपके जो दो सजैशंस हैं उन्हें व्यवहार में कैसे लाया जा सकता है, उस पर विचार करेंगे और मैंने आपको पहले ही निवेदन किया है कि हम पत्तल में सब्जियां देंगे। यह एक प्रयोग हम कर रहे हैं। वैसे ही दही कुल्हड़ में दी जाए लेकिन इसमें एक पैसेंजर्स रजिस्टैंस है क्योंकि कुल्हड़ में आप अगर चाय देते हैं तो लोगों को लगता है कि यह साफ नहीं है इसलिए एक रजिस्टैंस पैसेंजर्स का है। इसलिए साफ सुथरे कुल्हड़ भी बनाए जा सकते हैं। इस पर भी प्रयोग करना पड़ेगा। जैसे-तैसे हम अच्छे कुल्हड़ बना सकेंगे, मुझे लगता है कि अपने आप पैसेंजर्स उसे ऐक्सैप्ट करेंगे।